# (अव्यक्त इशारे)
# पुराने संस्कार परिवर्तन करर संस्कार मिलन की रास करो

1) ब्राह्मण जीवन में कोई भी बात मुश्किल नहीं है, लेकिन अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं। इसके लिए अपने को शमा पर इतने तक मिटाना है, जो कहते हो '"मेरे संस्कार" यह मेरापन भी मिट जाये। नेचर भी बदल जाये। जब हरेक की नेचर बदलेगी तब ब्रह्मा बाप समान अव्यक्ति फीचर्स बनेंगे।
2) जो भी पुराने संस्कार हैं और पुरानी नेचर है वह बदल कर ईश्वरीय नेचर बनाओ। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदतें न रहें। आपके परिवर्तन से अनेक लोग सन्तुष्ट होंगे। सदैव यही कोशिश करो कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दुःख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो - यह है ब्राह्मण कुल की रीति।
3) जैसे बाप के संस्कार सदा उदारचित, कल्याणकारी, निःस्वार्थ, रहमदिल, परोपकार आदि हैं। ऐसे आप बच्चों के भी संस्कार हो। सदा आपस में एकमत, स्नेही, सहयोगी बन, संस्कार मिलन करना - यही महानता है। संस्कारों का टक्कर न हो लेकिन सदा संस्कार मिलन की रास करते रहो। संस्कारों को मिलाना अर्थात् सम्पूर्णता को और समय को समीप लाना।
4) आप सभी बच्चों का यह ब्राह्मण जन्म मरजीवा जन्म है। मरजीवा बनना अर्थात् अपनी देह से, मित्र सम्बन्धियों से, पुरानी दुनिया से मर जाना। जैसे कोई मर जाता है तो पिछले संस्कार खत्म हो जाते हैं। तो यहाँ भी पिछले पुराने संस्कार ऐसे लगने चाहिए जैसे और कोई के थे, हमारे नहीं। जैसे ब्राह्मण गन्दी चीज़ को नहीं छूते हैं वैसे पुराने संस्कारों से बचना है। छूना नहीं है।
5) संस्कार मिलन की रास करने के लिए कुछ मिटाना पड़ेगा, कुछ समाना पड़ेगा, यह मेरे संस्कार हैं, यह शब्द भी मिट जाये। इतने तक मिटना है जो पुरानी नेचर बदलकर ईश्वरीय नेचर बन जाये। जितना एक दो के समीप आते जा रहे हो उतना एक दो को सम्मान देते चलो। सम्मान देने से संस्कार मिलन सहज हो जायेगा।
6) संस्कार मिलन की रास करने के लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो। अगर स्वीकार करना और सत्कार देना, यह दोनों ही बातें आ जाएं तो सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जायेंगी। जब एक अनेकों को सम्पूर्ण संस्कार वाला बना लेंगे तब समाप्ति होगी।
7) जितना आपस में संस्कारों को समानता में लायेंगे उतना ही समीप आयेंगे। जैसे साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी दृष्टा के रहे, यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इससे ही सर्व के दिलों पर विजयी होंगे और जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनता है।
8) देह की आकर्षण के संस्कार जो न चाहते हुए भी खींच लेते हैं, इस संस्कार को परिवर्तन करने के लिए मुख्य दो बातों का ध्यान रखो: **1-** हर एक के चरित्र को देखना है और **2-**

चैतन्य (विचित्र-आत्मा) को देखना है। वर्तमान समय मुख्य यही पुरुषार्थ चाहिए। इसी पुरुषार्थ से संस्कार पवित्र बनते जायेंगे। दैहिक दृष्टि समाप्त हो जायेगी।

9) अन्दर में जो भी पुराने भाव-स्वभाव का किचड़ा है, उसे परिवर्तन करने के लिए सच्चाई और सफाई का गुण धारण करो। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों में बनावटी रूप न हो। सच्चाई अर्थात् जो करें, जो सोचें वहीं वर्णन करें। ऐसा जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। सच्चे पर साहेब राज़ी होता है।

10) पुराने संस्कार तो मोटी चीज़ हैं अब पुराने संकल्प भी खत्म होने चाहिए। पुराने संस्कार उत्पन्न होने का कारण है विस्मृति। अपनी विस्मृति के कारण व्यर्थ बातें सहज को मुश्किल बना देती हैं। कोई न कोई संस्कारों में अगर यह देह का वस्त्र चिपका हुआ है अर्थात् तंग, टाइट है, तो उतर नहीं सकता। जब सभी संस्कारों से न्यारे हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी-प्यारी फरिश्ता समान हो जायेगी।

11) जैसे होली पर लोग आपस में गले मिलते हैं, ऐसे यहाँ संस्कार मिलन ही मंगल मिलन है। एक दो के संस्कारों को जान करके, एक दो के स्नेह में एक दो से मिल-जुल कर रहना है। जैसे कोई से विशेष स्नेह होता है तो उनसे मिक्स हो जाते हो, ऐसे एक दो में मिक्स होने के लिए जितना ही नॉलेजफुल उतना ही सरल स्वभाव बनो।

12) एक दो के स्नेही तब बनेंगे जबकि संस्कारों और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे। लेकिन ध्यान रहे आपकी स्थिति स्तुति के आधार पर नहीं हो। नहीं तो डगमग होते रहेंगे। कई बच्चे जब कुछ करते हैं तो उसके फल की इच्छा रखते हैं। स्तुति होती है तो स्थिति अच्छी रहती है अगर कोई निंदा कर देता है तो अपनी स्टेज को छोड़ एक दो से किनारा कर लेते हैं। लेकिन स्तुति-निंदा में समान स्थिति रहे तो संस्कार टकरायेंगे नहीं।

13) संस्कार मिलन की रास करने के लिए "बालक और मालिकपन" का गुण समान रूप में चाहिए। बालकपन अर्थात् निरसंकल्प हो जो आज्ञा मिले उस पर चलना। मालिकपन अर्थात् अपनी राय देना। जहाँ बालक बनना है वहाँ अगर मालिक जायेंगे तो संस्कारों का टक्कर होगा। तो राय दी, मालिक बने, फिर जब फाइनल होता है तो बालक बन जाना चाहिए।

14) जो बहुत समय के संस्कार होते हैं वही अन्त की स्थिति रहती है। लौकिक रीति से जब कोई शरीर छोड़ते हैं, अगर कोई संस्कार दृढ़ होता है, खान-पान वा पहनने आदि का तो पिछाड़ी समय भी वह संस्कार सामने आता है इसलिए अभी से ये विस्मृति के अथवा हार खाने के संस्कार मिट जाने चाहिए। इसके लिए अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि यह संस्कार, यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न नहीं होने देंगे। जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब अन्त में विजयी बनेंगे।

15) पुराने संस्कार, व्यर्थ संकल्प वा विकल्प के रूप में जब इमर्ज होते हैं तब बुद्धि में एक ही शब्द आता है कि यह क्यों हुआ, क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यु शुरू हो जाती है। इस क्यु की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी। फिर वह क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे।

16) जो अपने संस्कार बापदादा के समान नहीं हैं, उन्हें बिल्कुल टच नहीं करो। देह और देह के सम्बन्ध यह सीढ़ी तो चढ़ चुके अब बुद्धि में भी पुराने संस्कार इमर्ज न हों क्योंकि जैसे संस्कार

होंगे वैसा स्वरूप होगा। तो जैसे बापदादा के गुण हैं, वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प होने चाहिए फि सभी के मुख से निकलेगा कि यह तो वही लगते हैं।

17) पुरानी बातें, पुराने संस्कार ऐसे अनुभव हों जैसे कि नामालूम कब की पुरानी बात है। ऐसे नाम निशान खत्म हो जाये। इसके लिए 1- अपनी बुद्धि से उपराम 2- संस्कारों से भी उपराम। "मेरे संस्कार हैं" इस मेरे-पन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं पन से भी उपराम। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये।

18) प्लैन और प्रैक्टिकल को समान बनाने के लिए स्मृति में प्लेन, वाणी में भी प्लेन और कर्म में भी प्लेन अर्थात् श्रेष्ठता हो। कोई भी पुराने संस्कार का कहाँ दाग न हो। जब ऐसे प्लेन हो जायेंगे तब प्लैन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे। फिर सफलता एरोप्लेन की मुआफ़िक उड़ेगी।

19) कई बच्चे जब पुरुषार्थ नहीं कर पाते हैं तब नेचर पर दोष रखते हैं, कहते हैं हमारी नेचर ऐसी है। लेकिन नहीं। आप लोगों का तो कर्तव्य ही है नेचर क्योर करना। वह नेचर क्योर वाले फास्ट रखाते हैं। ऐसे आप बच्चे भी पुरुषार्थ में जो नुकसानकारक बातें हैं, उनकी फास्ट रखो और प्रतिज्ञा करो कि यह करके ही छोडूंगा। बन कर ही छोडूंगा जब इतना निश्चयबुद्धि बनेंगे तब विजयी बनेंगे।

20) सर्व का सहयोगी बनने के लिए अपने पुराने संस्कारों को मिटाना पड़ता है, जब अपने संस्कार मिटायेंगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेंगे। एक हम, दूसरा बाप। तीसरी बातें देखने में आयेंगी लेकिन देखते हुए भी न देखो, अपने को और बाप को देखो। स्लोगन यही याद रखो - कि **"स्वयं को मिटायेंगे लेकिन सर्व के सहयोगी बनेंगे।"**

21) जैसे वह बहुत पहले के साउन्ड को कैच करते हैं, वैसे आप अपने 5000 वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच करो। सदैव यह स्मृति में रखो कि मैं यही था और फिर बन रहा हूँ। जितना-जितना आदि और अनादि पवित्र संस्कारों को कैच कर सकेंगे उतना उसका स्वरूप बन सकेंगे।

22) जब आपस में दिलों का मिलन होगा तब आपके संस्कारों में बापदादा के संस्कार देखने में आयेंगे, फिर प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेंगे और समाप्ति होगी। बापदादा अब संस्कार मिलन की महारास देखना चाहते हैं, इसके लिए पहले स्वयं को एडजेस्ट कर दूसरों से संस्कार मिलाने का दृढ़ संकल्प करो। एडजेस्ट करने की शक्ति संस्कारों को मिला देगी।

23) बापदादा से तो मिलन मनाते हो लेकिन बड़े से बड़ा मिलन है आपस में संस्कारों का मिलन। जब यह संस्कार मिलन हो जायेगा तब जयजयकार होगी, इसके लिए मधुरता के गुण को धारण करो। कटाक्ष के बोल वा कटु बोल नहीं बोलो। जैसे मिलन में हाथ मिलाते हैं - यह मिलन है संस्कार मिलन अगर सबके संस्कार मिलकर बाप समान हो जाएं, सबके संस्कार एक समान हो जाएं तो एक राज्य, एक धर्म वाली दुनिया आ जायेगी।

24) मन में जब कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें सच्चाई और सफाई चाहिए। अन्दर में कोई भी भाव-स्वभाव, पुराने संस्कारों वा विकर्मो का किचरा नहीं हो। जो ऐसी सफाई

वाला होगा वही सच्चा होगा और जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले वह प्रभुप्रिय होगा। फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा। संस्कारों की टक्कर से बच जायेगा।

25) यह देह रूपी वस्त्र किसी भी संस्कार से लटका हुआ हो। जब सभी पुराने संस्कारों से न्यारा हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी हो जायेगी इसलिए सभी बातों में इज़ी रहो। जब खुद सभी में इजी रहेंगे तो सभी कार्य भी इज़ी होंगे और पुरुषार्थ भी होगा।

26) यदि आपको कभी कोई का विचार स्पष्ट नहीं लगता है तो भी ना कभी नहीं करना चाहिए। शब्द सदैव हाँ जी निकलना चाहिये। समय को देखकर ईशारा दे सकते हो, अगर उसी समय ना कहकर कट करेंगे तो संस्कार टकरायेंगे, इसलिए हाँ जी कर धरनी बनाओ, फिर समय देख इशारा दो, यही विधि है संस्कार मिलन की।

27) ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल पसन्द स्वभाव-संस्कार वाले। मैजारिटी 95 परसेन्ट के दिलपसन्द जरूर हो। दिल पसन्द अर्थात् सर्व से लाइट। हर बोल, कर्म और वृत्ति से हल्कापन अनुभव हो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करें, इसके लिए सहनशक्ति धारण करो। भल कोई किसी भी संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को भी सहयोग दो। कोई का हद का संस्कार प्रभावित न करे।

28) बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए विशेष दो बातें ध्यान में रखनी हैं - **एक** सदा संस्कारों को मिलाने की यूनिटी, इसके लिए हरेक अपने को चेन्ज करे, समाने की शक्ति धारण करे तो दूसरे का संस्कार भी अवश्य शीतल हो जायेगा। **दूसरा** - सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है। जब यह दोनों बातें सदा ध्यान पर रहें तब बाप जो है जैसा है, वैसा दिखाई दे और प्रत्यक्षता हो।

29) संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और रहेंगे भी लेकिन संस्कारों को टकराना या किनारा करके स्वयं को सेफ रखना - यह अपने ऊपर है। अगर कोई का संस्कार टकराने वाला है भी तो दूसरा ताली नहीं बजावे। हर एक स्वयं को चेंज करें। सदा एक दो में स्नेह की, श्रेष्ठता की भावना से सम्पर्क में आये, गुणग्राही बनें तो एकमत का संगठन परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनेगा।

30) अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सब-कुछ भस्म करो। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। असुर कोई व्यक्ति नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म किया। यह अभी आपकी ज्वालास्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्जवलित करो जिससे आसुरी संस्कार भस्म हो जाएं और यह कलियुगी संसार परिवर्तन हो जाये।

31) जैसे गेट की रखवाली की जाती है, ऐसे माया का जो गेट है, उसकी भी रखवाली करनी है, जिससे कोई भी आसुरी संस्कार वा संकल्प अन्दर प्रवेश न हो सके, फिर आपके पास कैसी भी आत्मा आयेगी वह आते ही आसुरी संस्कारों और व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो जायेगी। जब ऐसी सर्विस करेंगे तब प्रत्यक्षता होगी।